

अथ

चक्रबन्ध्यादिभ्यश्च चारुचिन्तकाव्यम्

Chakrabandhadika
Charuchitra Kavyam

109

(B)

X

X

2146

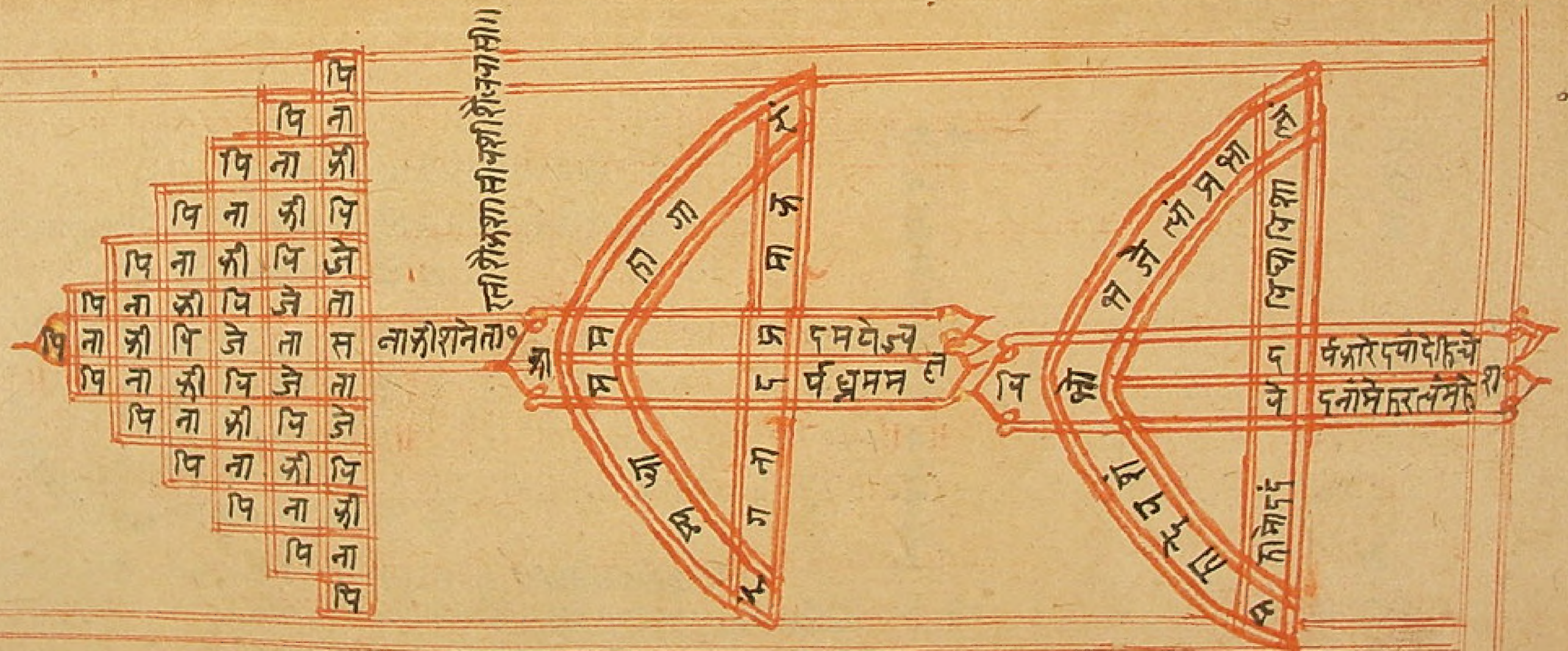
कुवेरगोविन्दपूजास्तम्

109

11 (B)

आयुष्यं न आयुषिदिताम्

श्रीशिवोपि जपते तमं ॥ चित्रचरित्रं चित्रासहचरमित्राग्निहोचनं पंदे ॥ रचितं विभुवनचित्रं पेनपवित्रं कुरुपेरमित्रेण ॥ १ ॥
 चेतसश्चित्रजनं चतुराणामचित्रं ॥ छत्रं चादिकं चारुचित्राभ्यं पिरच्यते ॥ २ ॥ छत्रं चोपथा ॥ पिनाकीपिजेतासनाकी
 शनेता ॥ रतीशैलशसीवशीशैलशसी ॥ ३ ॥ प्रकाशंतरेण छत्रं चोपथा ॥ रम्यधाममहागारं रंगनादप्रमादं ॥ कामदर्पध्व
 ममहं कामप्रदमयेज्यहं ॥ ४ ॥ पथाया ॥ महादेवशंभोभजेत्प्रभातं महामोददं पेदपिद्याविशाहं ॥ विभोपेदनां मेहरत्वं
 महेशविभोदर्पकारेदपां देहि चेश ॥ ५ ॥



सुवासनबंधोपया ॥ महाविषयंददुतधाममहत्तमादिभिर्भूषितसाम ॥ विभुप्रभुशु
भवेतरंरचि वल्लु ॥ प्रभागुणचातुशुसंपुसदेव ॥ ७ ॥ इति सुवासनबंधः ॥ ॥ ॥



सिंहासनबंधोपया ॥ ॥ सरसाररतं देवं देवां भूतिभूषितम् ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ तं चातपंयिनपनं नंदीश्वररसाकर ॥ ८ ॥ ॥ ॥

न दी
सा र ३ क
सा र ३ क
पा र ३ सा
पा र ३ सा

अथ

कुम्भबन्धादिन्दु चारुचित्रकाव्यम्

Chakrabandhadi Ka
Charochitra Kavyam

109

(B)

X X

2146

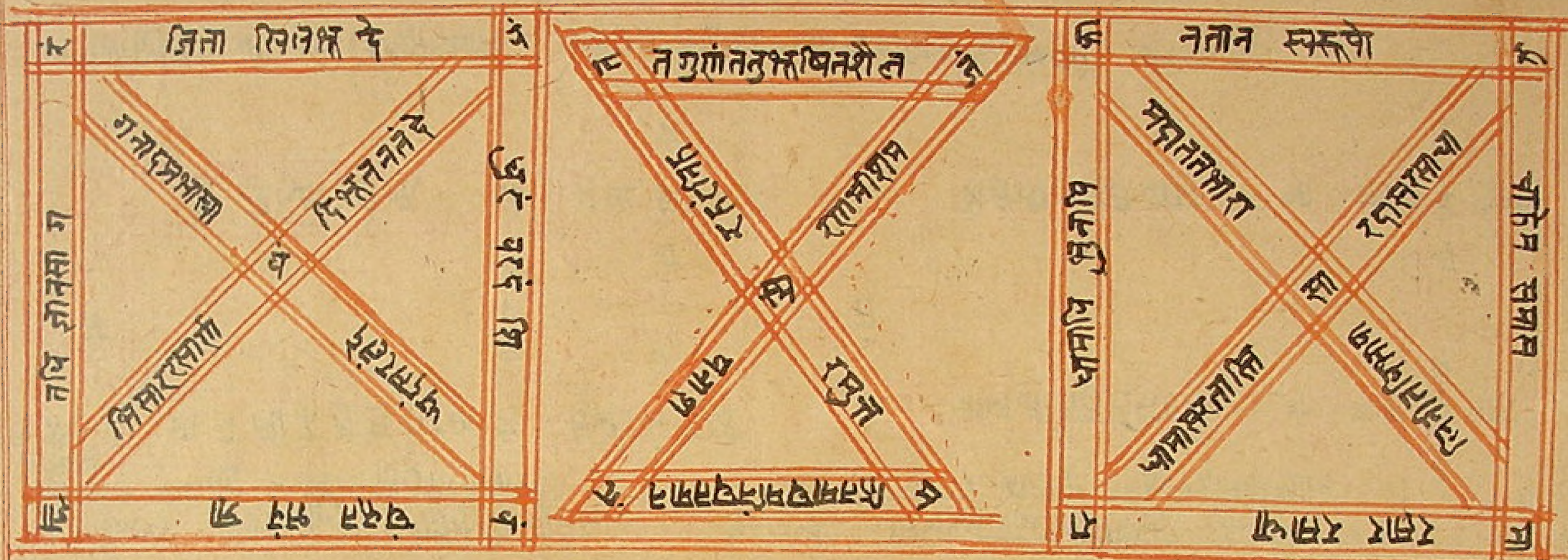
कुम्भरामायणम्

अथ चारुचित्रकाव्यम्

109
11 (13)

96

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥



१९

यंदिभूतनतं देवं चुरं वरदं शिवं ॥ यं च दं सरहं देवं च देऽहं रस दं च ॥ २३ ॥ यं च कृतं न वं प्राज्ञा ज्ञा भिसारसां वं ॥ वृत्तिसारसा भिसा ज्ञा तपि
ज्ञानसा गं ॥ २४ ॥ रंगना दप्रभासा च वस्या भा प्रदना गं ॥ रं जिता विनभ देवं च देतं नत भूदि पं ॥ २५ ॥ प्राची नमते ना पं डम क वं च ॥ तम ते प्रका रं तरेण पथा
स्मरहरं निहत स्मरमुत्तम स्मरराजीशम जं सम वनाशन ॥ तत गुणं तनुभूषितशैल जं म हित माघ मनि च तमाननं ॥ २६ ॥ पथा या ज्ञा रां तरेण म क्तो डम क
वं च ॥ सारदा ससा चा ह ह चा हेम समाऽसमा ॥ मा विनी तपि भा वा सा सा वा भा वित नी हि मा ॥ २७ ॥ मा रसा रसा चारा रा धा मा स रता तिसा ॥ सा तिसा रसा
मा चारा रा धा मा वि सु पि पि ॥ २८ ॥ आ म दा तन भा रा सा सा रा भा तत दा म का ॥ आ नता न स्य रु के ह ह चा सा रसा ऽरसा ॥ २९ ॥ डम क वं च तः प्रा ची च म आ रसा
रसा ॥ म त्ते डम क वं च री ति रे वा वि ह दणा ॥ ३० ॥ म हो ऽयं हं शं भू रा म दु भा जं म दा प ह गो प ति मि दु भा हं ॥ म ही च रस्य भ जे गो प वा जे म ह द वा जित शै व
पा हं ॥ ३१ ॥ पथा या ॥ स ना ग हा र भु व ने भू सा रं स चं द्र मा रं जि तं तं य ता रं ॥ स म स दा रं ज्ञा मा मि हा रं स दा म हो मं जु मु दा म गारं ॥ ३२ ॥ प्रा ची नम ते ना पं व जं च ॥
म न्म ते न तु रं च यं च प्र का रो प था ॥ मं या हं पं च त नुं स पा मं मं दी रु ता रिं र पि को टि चा मं ॥ मं वि प्रि पं चं श ता मि रा म म न स त्स्म र द नं प्रा मं ॥ ३३ ॥ पथा
या ॥ मं या प्रि पं शं भू रा म दु भा हं तं गो प र प्रा ति भू रं स रा मं ॥ मं जु प्र भं वा जित शै व ग हं हं प्रेश पा हं भ जे दा यं प्रा मं ॥ ३४ ॥ च त्प्रा रो पि यं चं च वि ज्ञे पाः ॥

हो ज्येष्ठ शंकर मिंडभा
 दापत गोपति मिंडभा
 होपर स्पमज गोपपा
 होजदं पाहित शैतजा

या हवें मंत्रत उंलजा
 ५२५ ५२५ ५२५
 विप्रियं चंद्रश ताभिरा
 ५५५ ५५५ ५५५

याजिवं शंकर मिंडभा
 ५५५ ५५५ ५५५
 जुमभं पाहित शैतजा
 ५५५ ५५५ ५५५

२०

रथपं चोपथा ॥ तं चावली हेतुमुदरनागंतं शैतजा होर
 तेनापं पंध ॥ मन्मतेतु ॥ तं चावली हेतुमुदरनागंतं शै
 तमचप
 ५२५

चा व ली हे तु मु द र ना गं
 तं
 शै ल जा हो र

म
 ५५५ पं देहरं
 च

च
 ५५५ आ मजदं
 मं

तयामभागं ॥ कामप्रदं कामहरं च कामपंदेहरं पंचतरं मंत्रतं ॥ ३१ ॥
 लजां संस्तुतयामभागं ॥ कामप्रदं कामहरं च कामप्राप्तापि

चा व ली हे तु मु द र ना गं
 तं
 शै ल जा हो र त याम

च
 गाधरं आ महरं
 मं

च
 भावितं पं चतमं
 दे

तं चावली हेतुमुदरनागंतं गंता परं कामहरं च कामं

तं शैलजा होरुतयामभागं भाभावितं पंचतमं चपंदे ॥ अपं पाठः साधुः

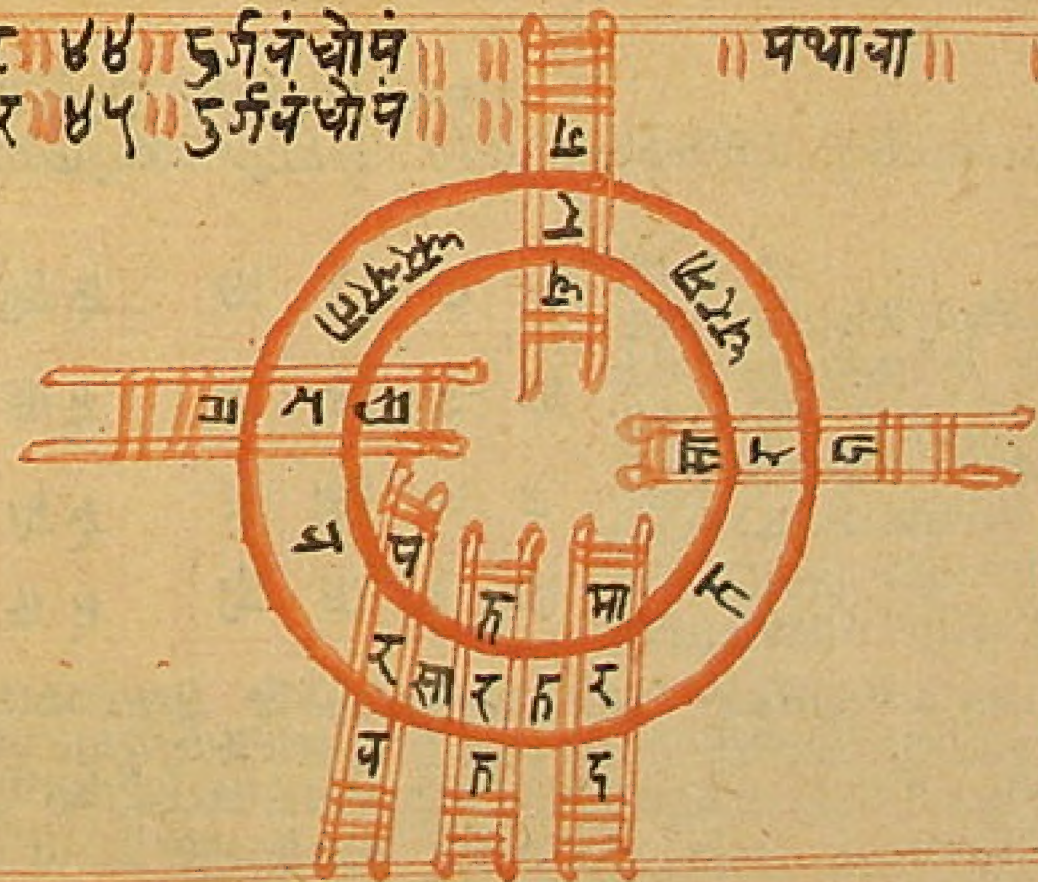
सदपोदमसमसकृतमसंस्तुतसर्गनिवास ॥ निगमापनगौरीहतासंपुतपासनास ॥ ४० ॥ यथाया ॥ चरसुताचरध-पतमंहरंधनदसजितध
 र्धधुरंधरं ॥ स्मरहरपरदानेदपाकृभजभयस्तुतमेयमहेश्वरं ॥ ४१ ॥ चतुराचक्रं जंघाधिमौश्रुतो ज्ञोविज्ञोको ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



ल्लषारचक्रं जंघाधिमौश्रुतो ॥ पार्वतीपहृत्तमं पापपुंजांतं पापैरिस्तुतं पातितं चैपुरं ॥ पातितक्षमातलं पाटितारिभ्रजं पाधिमौक्षप्रदं पाशमुपैर्तु
 तं ॥ ४२ ॥ कृतदंष्ट्रानिरातं जंघाधिमौश्रुतो ॥ महोऽयं हतमहाराजसुरस्यं दसतां मतं ॥ ४३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

२१

वारसारधरमारहरहरसुरवरवरतार ॥ सारमारपरतारचरहरदरभरपुरगार ॥ ४४ ॥ दुर्जंघोपं ॥ यथाया ॥
 हरहरहरदरमारहरवारसारधरमार ॥ गरचरचरचरतारतरसुरवरवरवरसार ॥ ४५ ॥ दुर्जंघोपं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



हितोरसात्ताऽरताहितोऽस्ति
 साररसास्तिताऽरसाऽनुसो
 सोऽनुसाररसातनसारसा ॥ ४६
 सऽर्तोभद्रं चोपं ॥ अश्पग
 तिपं चोप्या ॥ शंभो देहि परंता
 ने भवा न्यो ने तिसा द्विधे ॥ प्रभो
 नहि परं ज्ञानेशिवा ज्ञाने ह्यस
 न्निधे ॥ ४८

२२

A circular diagram with a central 'र' (Ra) and a ring of 16 'अ' (A) characters. The 'अ' characters are arranged in a ring around the central 'र', with some characters appearing to be in a different script or style. The diagram is drawn with a red border and a central black dot.

पथापोतापं ॥ आरवीरहरवीरहीरगौरसुरवर ॥ तारमारहरस्मेरकारतारच
नारामावामाश्रमासमा ॥ समासमा वामापोमासामातामानमार्गमा ॥ ३२ ॥ ॐ वं

र वी स ७ अ ग
सा ५ न
ज ५ क ५

गेयेति ॥ साराश्लेषा ॥ तारापुन्यता ॥ यामासुंदरी ॥ ५ ॥ मारातीतिमारा ॥ ताराः प्रणवस्तत्रा रमतीति ताराया ॥

॥ गेया सारा तारा यामा अयेया मारा ताराया ॥

॥ कं ऊण वं धो वं ॥

॥ जेया मारा तारा श्यामा हेया दाता माराया ॥ ५७ ॥

कंसुरं मारा तीतिमारा ॥ तारा भगवती देवी ॥ श्यामा ॥ ५८ ॥ अयेया ॥ मारेण कामेन जायाया ॥ तारा हेया स्या ॥ पापयेत्यर्थः ॥ ५९ ॥

२४

अथ त्रिपदी नं धम मारा यथा ॥ शंभो देहि हरं दाने भगव्यो नेति सहि धे ॥ प्रभो नहि पदं जानेशिवा जानेत सन्निधे ॥ ४९ ॥ यथा या दोहायां ॥
काम देव हर सोम शुचि पद वर भव स द म व ॥ याम देव हर सोम शुचि पद हर भव म द म व ॥ ५० ॥ सर्वे प्येते त्रिपदी वंधाः प्रभो रं तस्तया विज्ञेयाः ॥

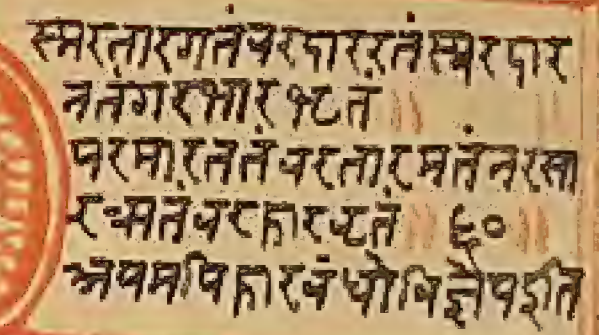
शं	दे	व	रा	भ	यो	ति	हि
भो	हि	रं	ने	या	ने	स	धे
प्र	न	प	जा	शि	जा	ल	नि

ज	न	प	द	र	भ	व	स
क	हि	रं	ने	या	ने	स	धे
प्र	न	प	जा	शि	जा	ल	नि

ज	न	प	द	र	भ	व	स
क	हि	रं	ने	या	ने	स	धे
प्र	न	प	जा	शि	जा	ल	नि

काम	हर	शुचि	वर	सद
देव	सोम	पद	भव	मव
याम	हर	शुचि	हर	मद

काम	वर	सोम	चिप	वर	यस	म
दे	र	शु	द	भ	द	व
याम	वर	सोम	चिप	हर	यस	म



कलापरकलापर
रक्षणसं ६८

॥ सुरसारदादिशारदाक्षरपादाशिखरारूढ ॥ पुरसारदादिनारदाक्षरसारदाक्षरभावरूढ ॥

सु	र	सा	र	पा	र	वि	शा	र	पा	क्ष	र	पा	र	पा	शि	व	ता	र	ॐ	तं
उ	र	रा	र	पा	र	वि	ना	र	पा	क्ष	र	सा	र	पा	म	प	भा	र	ह	तं
उ	व	प्र	सु	त	उ	ति	प्र	श्रु	त	श्रु	ति	म	नु	त	श्रु	ति	सा	र	ॐ	तं
म	णि	भा	प्र	ता	त	प	सं	सु	ता	नु	त	पा	द	भा	शु	चि	ता	र	रु	तं

ध्रुवप्रस्तुतघुतिप्रभुतश्रुतिमन्त्रश्रुतिस्ताररु॥ मणिभापुतातपसंस्तुतानुतपादभाशुचिताररु॥ ६६॥ षष्ठ्यादिप्रचित्ये
नभामयेतुःस्तपुषेः॥ ह्रींगीताक्षराभामयेतुःस्तपुषाम॥ ६७॥ सारापक्षीरधाराऽधिगतप्रसुमती नारतारावलीयेनाराभारा

[illegible]

माखीरहरक्षीरपूरगौरस्फुरद्वर ॥ ६८ ॥ हरस्फुरस्फुरद्वरसारधतस्थिर ॥ वरनारपरस्फुरभाज्यरसरस्फुर ॥ ६९ ॥ अयोप्यनीश्रवाद्यं चापि ह्येवा इति ॥

[illegible]

मारततघुतितार दरभाम दारुदक्षनिशेशचपाधर ॥ धीरधुरीताशुचेसुमते ॥ तारगतस्तुतिभारधरक्रमकारुदक्षनरेशनपाकर ॥ क्षीरनदीनहचेऽतिमते

मार	तत	प्रति	तार	दर	अम	दरक	दक्ष	निशेश	चपा	चर	चीर	उरीरा	शुचे	सुमते०
तार	गत	सुति	भार	चर	क्रम	भारक	अक्ष	नरेश	नपा	कर	क्षीर	नदीन	रुचे	अतिमते०
मार	हत	हृति	पार	चर	धम	भारक	पक्ष	जनेश	दपा	चर	कीर	नदीन	शुचे	सुगते०
दर	रत	श्रुति	तार	तर	क्रम	तारक	रक्ष	महेश	जपा	दर	चीर	पुतीन	शुचे	अपिरे०

मारुतश्रुतिवारपणमकारभपक्षजनेशदकाचर ॥ गीरनदीनशुचेसुगते ॥ दारतश्रुतितारतरक्रमतारकरक्षमहेशजपादर ॥ धीरमुनीनशुचेऽभिरते ॥ ६५ ॥

सारस

सा ॥ रसा ॥ तारतमाला विशालतटीयकुलाचनिकुंजकुटीपिरसा ॥ नम्यपिराजित
रुह्यानयतामरसासरसा ॥ ८२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]

109

11 (13)

इति

कुलवंधादिक चारुचिन्मकाव्यम्

कुवेरमिन्नपणीतम्

109

X X

11 (B)

2146